अध्याय 12

संगीतज्ञों का जीवन परिचय

उस्ताद विलायत खॉ

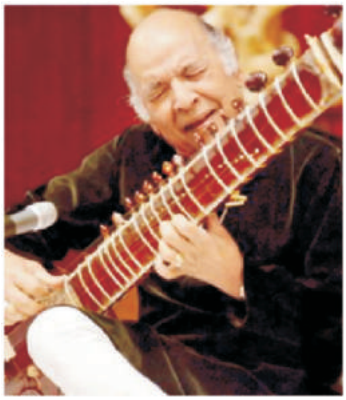

सुप्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खॉ का जन्म 28 अगस्त 1928 गौरीपुर बंगाल में हुआ था। उस्ताद विलायत खां की पिछली कई पुश्ते सितार वादन से जुड़ी हुई थी। उनके दादा उस्ताद इमदाद खॉ तथा पिता उस्ताद इनायत खॉ की गिनती बेजोड़ सितार वादकों में की जाती है। उस्ताद इनायत खॉ ने ही सितार को परिष्कृत करने में बड़ी भूमिका निभाई है। उन्होंने ही प्रसिद्ध सितार निर्माता कनाई लाल के साथ मिलकर सितार में तरब के तारों की शुरूआत की थी ।

उस्ताद विलायत खां ने अपनी सूझबूझ और कठिन परिश्रम से सितार वादन की अपनी अलग शैली विकसित की है। इस शैली में गायकी अंग का प्रभाव परिलक्षित होता है। इस गायकी अंग में खयाल शैली के साथ साथ उपशास्त्रीय गायन शैलियों जैसे ठुमरी, दादरा, कजरी आदि का प्रभाव दिखाई देता है।

उस्ताद विलायत खॉ की आरंभिक शिक्षा पिता इनायत खॉ से ही हुई । परन्तु जब वे 12 साल के थे तभी इनायत खॉ का निधन हो गया। बाद में इन्होंने अपने नाना उस्ताद बन्दे हसन खॉ जो नामी गायक थे तथा मामा उस्ताद मोहम्मद खॉ से तालीम ली। आरंभ में उनका झुकाव गायन की ओर होगया था। परंतु अपनी मॉ के आग्रह पर उन्होंने अपनी खानदानी परंपरा को अपनाया और पुनः सितार को ही अपना माध्यम बनाया। उन्होंने सितार में कुछ परिवर्तन भी किये। जैसे दो जोड़े के तारों के स्थान पर एक ही जोड़े का तार प्रयोग करना शुरू कर दिया तथा गंधार पंचम के दो तारों का प्रयोग आरंभ किया ।

उस्ताद विलायत खॉ ने कुछ फिल्मों के लिए संगीत निर्देशन का कार्य भी किया है। ये हैं सत्यजीत राय की 1958 में बनी बांगला फिल्म जलसाघर मर्चेंट आइवरी प्रॉडक्शन की 1969 में बनी फिल्म गुरू तथा 1976 मे बनी हिंदी फिल्म कादम्बरी ।

उनकी कला साधना के लिए राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने उन्हें आफताब–ए–सितार सम्मान प्रदान किया। भारत सरकार ने उन्हें 1964 मे पद्मश्री तथा 1968 में पद्म भूषण से सम्मानित किये जाने की घोषणा की परन्तु दोनों ही अवसरों पर उन्होंने यह सम्मान प्राप्त करने से इनकार कर दिया। उनका मानना था कि उन्हें ये दोनों सम्मान उनके योगदान के लिए कम तथा देर से दिये गए हैं।

उस्ताद विलायत खॉ ने दो विवाह किये । उनके दो पुत्र हैं –शुजाअत खॉ तथा हिदायत खॉ और दो पुत्रियां हैं – ज़िला खान तथा यमन खान। दोनों पुत्र उत्कृष्ट सितार वादक हैं। पुत्री ज़िला खॉ गायिका हैं। लगभग पॉच दशकों तक पूरे विश्व में अपने सितार का जादू बिखेरने वाले उस्ताद विलायत खान को फेंफडों के केंसर ने अपनी चपेट में ले लिया। इलाज के लिए उन्हें मुम्बई के जसलोक अस्पताल में भर्ती करवाया गया यही पर 13 मार्च 2004 के दिन उन्होंने अन्तिम सांस ली।

उस्ताद अली अकबर खान

प्रख्यात सरोद वादक उस्ताद अली अकबर खान का जन्म 14 अप्रेल 1922 को बांग्लादेश के शिवपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम अलाउद्दीन खान तथा माता का नाम मदीना बेगम था। इनके पिता उस्ताद अलाउद्दीन खान एक विख्यात संगीतज्ञ एवं संगीत गुरू थे। उस्ताद अलाउद्दीन खान प्रमुख रूप से एक सरोद वादक थे परन्तु ऐसा कोई भी वाद्य नहीं जो वे न बजा सकते हो।

उस्ताद अली अकबर खॉ ने अल्पायु से ही संगीत की शिक्षा अपने पिता की देखरेख में आरंभ कर दी थी। उन्होंने अपने चाचा

उस्ताद आफताबुद्दीन खान से तबला भी सीखा। 13 वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी पहली प्रस्तुति दी। 22 वर्ष की उम्र में वे जोधपुर राजदरबार में संगीतकार नियुक्त हुए। महाराजा हनुमन्त सिंह इनसे इतने प्रभावित थे कि प्रसिद्ध उम्मेद भवन पैलेस में बने ऑडिटोरियम का नाम ही Ali Akbar Hall रख दिया।इन्होंने पूरे भारत में अपने कार्यक्रम दिये। 1955 में अमेरिकी टेलीविजन पर एलिएस्टर कुक के ओमनीबस कार्यक्रम में प्रस्तुति देने वाले वे प्रथम भारतीय बने। भारतीय संगीत के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से उन्होंने 1956 कलकत्ता में अली अकबर कॉलेज ऑफ म्यूजिक की स्थापना की।

दो साल बाद ही बर्कले केलिफॉर्निया में भी इसी की एक शाखा भी स्थापित हुई। 1968 में यह अपने वर्तमान स्थान सेन राफेल केलिफॉर्निया में स्थानांतरित हो गया । तब से ही खॉ साहब अमेरिका ही बस गए। 1985 में अली अकबर कॉलेज ऑफ म्यूजिक की एक शाखा बेसिल, स्विटजरलैण्ड में भी स्थापित की जो उनके स्विस शिष्य केन जुकरमैन देखते है। वे अल्प समय में ही एक राग के स्वरूप को प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थे, जिसके कारण इनके 78 आरपीएम के छोटे रिकार्ड खूब सफल हुए। उनकी लंबी मंचीय प्रस्तुतियां सामान्यतया शान्त एवं गंभीर आलाप और जोड़ के साथ शुरू होकर द्रुत गत और झाले की ओर बढ़ती हैं जो सेनिया बीनकार शैली की विशेषता है। साथ ही दो वाद्यों (सरोद एवं तबला या सरोद व सितार) के बीच होने वाले सवाल जवाब को प्रस्तुत करना उनकी वादन की मुख्य विशेषता है।

खान साहब ने कई जुगलबंदियों मे भाग लिया और प्रसिद्धि पाई । उसमें सबसे प्रसिद्ध जुगलबंदी उनके बहनोई और विश्वविख्यात सितार वादक पं0 रविशंकर एवं प्रसिद्ध सितार वादक पं0 निखिल बनर्जी प्रमुख हैं। वॉयलिन वादक एल सुब्रमण्यम और सितार वादक उस्ताद विलायत खान के साथ भी इनके कई कार्यक्रम हुए हैं।

खान साहब ने कुछ फिल्मो में संगीत निर्देशन का कार्य भी किया। चेतन आनंद की आंधियां, मर्चेंट आइवरी की हाउस होल्डर और क्षुधित पाषाण (Hungry Stones) सत्यजीत राय की देवी, बर्नार्डो बर्तोलूची की लिटिल बुद्धा प्रमुख हैं।

उस्ताद अली अकबर खॉ साहब को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए हैं। 1988 में भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण, 1991 में मैक आर्थर जीनियस ग्रांट से 1997 में कला के क्षेत्र में संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे बड़ा सम्मान नेशनल हेरिटेज फैलोशिप भी दी गई। एकाधिक बार वे ग्रेमी पुरस्कार के लिए नामित भी हुए है।

किडनी की लंबी बीमारी से जूझते हुए 9 जून 2009 के दिन सेन फ्रांसिस्को कैलिफोर्निया में उनका निधन हुआ।

उ.अल्लारक्खा उ.अली अकबर खॉ जॉर्ज हैरिसन पं.रविशंकर उ.बिस्मिल्लाह खॉ

डॉ0 एन0 राजम

हिन्दुस्तानी संगीत मे वाद्य वादन के क्षेत्र में एक जाना पहचाना नाम है– वॉयलिन वादिका पद्म विभूषण डॉ0 (श्रीमती) एन0 राजम। डॉ0 (श्रीमती) एन0 राजम का जन्म 1938 में एर्नाकुलम केरल के एक प्रतिष्ठित संगीतज्ञ परिवार मे हुआ। उनके पिता विद्धान ए0 नारायण अइयर कर्नाटक संगीत के एक प्रतिष्ठित कलाकार थे। उनके भाई टी0 एन0 कृष्णन भी कर्नाटक शैली के एक अत्यंत प्रतिष्ठित वॉयलिन वादक हैं।

डॉ0 एन0 राजम की संगीत की आरंभिक शिक्षा कर्नाटक शैली में अपने पिता के सानिध्य में ही हुई।इनकी शिक्षा एम0 सुब्रमण्यम अइयर से भी हुई। ख्यातनाम संगीतज्ञ पं0 महादेव मिश्रा से भी इन्होंने संगीत की शिक्षा ली।

एन0 राजम ने तीन वर्ष की आयु से ही वॉयलिन बजाना आरंभ कर दिया था। नौ वर्ष की आयु तक ये एक प्रदर्शक कलाकार के रूप में अपने पिता के साथ अपनी मंचीय प्रस्तुतियां देना आरंभ कर चुकी थी।तत्पश्चात संगीत की उत्तर भारतीय परंपरा के अनुसार राग विस्तार एवं राग चलन की गहान शिक्षा पं0 ओमकारनाथ ठाकुर की देखरेख मे हुई। इन्होंने बी0ए0 तथा एम0 ए0 (संस्कृत) की परीक्षाएं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक के साथ उत्तीर्ण की। इन्होंने अपनी बी0म्यूज की परीक्षा गंधर्व महाविद्यालय मण्डल इलाहाबाद से तथा एम0म्यूज0 की परीक्षा प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद से उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण की। तत्पश्चात अपनी पीएच0डी0 बनारस हिन्दू विश्वविद्याल से की। ठसके बाद डॉ0 एन0 राजम ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में संगीत विभाग में प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएं देना आरंभ की। लगभग 40 वर्षो तक वे इस विश्वविद्यालय में रही। इस दौरान वे संगीत विभाग की विभागाध्यक्ष और डीन भी रहीं।

उनके प्रमुख शिष्यों में उनकी पुत्री संगीता शंकर व संगीता शंकर की दोनों पुत्रियां रागिनी और नन्दिनी, उनकी भतीजी कला रामनाथ आदि प्रमुख हैं। इन्हें राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

- ? पद्म श्री –1984
- ? संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार –1990
- ? पद्म भूषण –2004
- ? संगीत नाटक अकादमी रत्न सदस्यता (फैलोशिप) –2012

पंडित हरिप्रसाद चौरसिया

प्रसिद्ध बांसुरी वादक पद्म विभूषण पंडित हरि प्रसाद चौरसिया का जन्म 1 जुलाई 1938 को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता पहलवान थे। जब हरि जी 5 वर्ष के थे तो इनकी माता का देहान्त हो गया। इनका बचपन बनारस में बीता। उनकी शुरूआत एक तबला वादक के रूप में हुई । पं0 हरि प्रसाद चौरसिया ने अपने पिता की मर्जी के बिना अपने पड़ौसी पं0 राजाराम से संगीत सीखना आरंभ कर दिया था। बाद में बनारस के पं0 भोलानाथ प्रसन्ना से इन्होने बांसुरी की शिक्षा ली।

तत्पश्चात् कुछ बरसों तक इन्होंने आकाशवाणी के कटक केन्द्र में बांसुरी वादक के रूप में कार्य किया। बाद में ये कटक से मुम्बई आ गए और फिल्म संगीत से जुड़ गए। इन्होंने शंकर जयकिशन, एस0 डी0 बर्मन, आर0 डी0 बर्मन, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल आदि प्रसिद्ध संगीतकारों के गीतों में बांसुरी वादन किया है। बंबई में ही ये बाबा अलाउद्दीन खॉ की सुयोग्य पुत्री सुरबहार वादिका अन्नपूर्णा देवी की शरण में गए, जो उस समय एकान्तवास कर रहीं थी और सार्वजनिक रूप से मंच प्रदर्शन करना छोड़ चुकी थी। अन्नपूर्णा देवी के शिष्यत्व से हरि जी की प्रतिभा मे निखार आया और उनके संगीत को जादुई स्पर्श मिला।

पंडित हरिप्रसाद चौरसिया ने बांसुरी के ज़रिये शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने का काम तो किया ही है साथ ही संतूर वादक पं0 शिव कुमार शर्मा के साथ मिलकर शिव–हरि नाम से कुछ हिन्दी फिल्मों में मधुर संगीत दिया। इस जोड़ी की फिल्में हैं– सिलसिला, विजय, फासले, चांदनी, साहिबां, डर, लम्हे ।

पंडित हरिप्रसाद चौरसिया को कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान भी प्राप्त हुए हैं। कुछ प्रमुख हैं–

? फ्रांस सरकार द्वारा उन्हें नाइट आफ दि ऑर्डर ऑफ आर्ट्स एंड लैटर्स सम्मान

? संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार 1984

? कोणार्क सम्मान 1992

? पद्म भूषण 1992

? पद्म विभूषण

? हाफिज अली खान पुरस्कार

पंडित विश्व मोहन भट्ट

मोहन वीणा के जनक ग्रेमी पुरस्कार से सम्मानित पंडित विश्व मोहन भट्ट का जन्म सन 1952 में जयपुर के एक प्रतिष्ठित संगीत परिवार में हुआ था। इनके पिता पं0 मनमोहन भट्ट एवं माता श्रीमती चंद्रकला भट्ट जाने माने संगीतज्ञ थे। इनके बड़े भाई पं0 शशि मोहन भट्ट सितार के एवं महेन्द्र भट्ट वॉयलिन के जाने माने कलाकार रहे हैं।

यथा नाम तथा गुण की कहावत को चरितार्थ करते हुए पं0 विश्वमोहन भट्ट ने अपनी कला से पूरे विश्व को मोह लिया है और अपनी मेहनत लगन और प्रतिभा के बल पर अपना नाम देश के अग्रणी कलाकारों में शुमार करने में सफलता पाई है।

संगीत की आरंभिक शिक्षा इन्होंने अपने माता–पिता तथा बड़े भाई पं0 शशि मोहन भट्ट से प्राप्त की। तत्पश्चात् ये अग्रणी संगीतज्ञ भारत रत्न पं0 रवि शंकर के शिष्य बने। विश्व मोहन भट्ट ने बरसों के शोध और परिश्रम से पश्चिमी वाद्य हवाइयन गिटार को भारतीय संगीत के अनुकूल बनाने में सफलता हासिल की है। इन्होंने गिटार में अतिरिक्त 14 तार और लगाकर इस पश्चिमी वाद्य को पूर्ण रूप से भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनुरूप ढाल दिया। अपने इस वाद्य को इन्होंने मोहन वीणा नाम दिया। और वर्तमान में विश्व मोहन भट्ट और मोहनवीणा एक दूसरे के पर्याय बन गए है।

विश्व मोहन भट्ट ने अपने अथक परिश्रम से अपनी अनूठी वादन शैली विकसित की है। इसमें गायकी अंग और तंत्रकारी अंग का अत्यंत कुशल समावेश है। राग की शुद्धता, चमत्कारी तिहाइयां, लय के विभिन्न प्रकार और अत्यंत द्रुत लय में झाला इत्यादि इनके वादन की प्रमुख विशेषताएं हैं।

एक सफल मोहन वीणा वादक होने के साथ–साथ उन्होंने विश्व के कई प्रख्यात कलाकारों के साथ फ्यूजन के अत्यंत सफल प्रयोग भी किये हैं। उन्होंने चीनी, अरबी, जापानी अमेरिकी कलाकारों के साथ जुगलबंदी के कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये हैं तथा इनके इस प्रकार के संगीत के कई रिकॉर्ड भी जारी किये गए है। अमेरिकी गिटार वादक राइ कूडर के साथउनका एलबम "ए मीटिंग बाई द रिवर" इतना प्रसिद्ध हुआ कि 1994 में इस एलबम को विश्व का सबसे प्रतिष्ठित ग्रेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

इसके अलावा वे एक अत्यंत कुशल संगीत रचनाकार भी हैं। इनके संगीत निर्देशन में प्रतिष्ठित रिकॉर्ड कंपनी म्यूजिक टुडे ने एक एलबम "म्यूजिक फॉर रिलेक्सेशन" भी जारी किया था जो अत्यंत सफल रहा था। इसके अतिरिक्त कविता कृष्णमूर्ति और ए0 हरिहरन द्वारा गाए एलबम "मेघदूत" का संगीत निर्देशन भी इन्हीं के द्वारा किया गया था। मणिरत्नम द्वारा निर्मित तमिल एवं हिन्दी में बनाई गई द्विभाषी फिल्म में ए आर रहमान के साथ भी इन्होंने काम किया है।

पं0 विश्व मोहन भट्ट को उनके द्वारा संगीत के क्षेत्र में किए गए कार्यों के लिए बहुत से सम्मान और पुरस्कार भी प्रदान किये गए हैं। कुछ प्रमुख निम्न हैं–

? 1992 महाराणा मेवाड़ पुरस्कार

? 1994 ग्रेमी पुरस्कार

? 1994 राजस्थान सरकार द्वारा 100000 रुपये का विशेष पुरस्कार

? 1999 केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार

? 2002 पद्म श्री

मुख्य बिन्दु

- उस्ताद विलायत खॉ इमदाद खानी घराने के प्रमुख सितार वादक थे। उनके पिता का नाम उस्ताद इनायत खॉ था। उनका जन्म 28 अगस्त 1928 को गौरीपुर, बंगाल में हुआ था। उनकी मृत्यु 13 मार्च 2004 को मुम्बई में हुई।
- मैहर घराने के प्रमुख सरोद वादक पद्मविभूषण उस्ताद अली अकबर खॉ बाबा अलाउद्दीन खाँ के पुत्र थे। इनका जन्म 14 अप्रेल 1922 को बांग्लादेश में तथा मृत्यु 9 जून 2009 को सेन फ्रांसिस्को में हुई।
- प्रसिद्ध बांसुरी वादक पद्म विभूषण पं0 हरिप्रसाद चौरसिया का जन्म 1 जुलाई 1938 को इलाहाबाद में हुआ था।
- विश्व मोहन भट्ट ने पश्चिमी वाद्य हवाइयन गिटार को भारतीय संगीत के अनुकूल बनाने में सफलता हासिल की है। इन्होंने गिटार में अतिरिक्त 14 तार और लगाकर इस पश्चिमी वाद्य को पूर्ण रूप से भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनुरूप ढाल दिया। अपने इस वाद्य को इन्होंने मोहन वीणा नाम दिया।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. उस्ताद अली अकबर खाँ का जन्म कब हुआ–

   (अ) 14 अप्रेल 1922 (ब) 28 दिसम्बर 1915

   (स) 9 अगस्त 1920 (द) 3 जनवरी 1928

2. पं. हरिप्रसाद चौरसिया किनके शिष्य थे–

   (अ) पन्नालाल घोष (ब) उस्ताद अलाउद्दीन खाँ

   (स) अन्नपूर्णा देवी (द) रविशंकर

3. एन. राजम के गुरु कौन थे?

   (अ) पं. वी. जी. जोग (ब) डी. के. दातार

   (स) डी.वी. पलुस्कर (द) ओमकारनाथ ठाकुर

उत्तरमाला– (1) अ (2) स (3) द

भारत रत्न उ. बिस्मिल्लाह खां

प्रश्न–

1. उस्ताद विलायत खॉं के गुरू कौन थे ?
2. उस्ताद विलायत खॉ की मृत्यु कब हुई?
3. उस्ताद अली अकबर खॉ द्वारा स्थापित संगीत शिक्षण संस्थान का नाम क्या है ?
4. डॉ0 एन0 राजम कौन से विश्व विद्यालय में प्रोफेसर रहीं हैं ?
5. पं0 विश्व मोहन भट्ट को किस एलबम के लिए ग्रेमी पुरस्कार प्रदान किया गया था?
6. पं0 हरि प्रसाद चौरसिया ने किन किन फिल्मों के लिए संगीत निर्देशन का काम किया है?

अभ्यास कार्य

? विभिन्न वाद्यों के वर्तमान में प्रसिद्ध कलाकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करना तथा उनके चित्र अपनी कक्षा में लगाना सरोद बांसुरी मोहन वीणा व वॉयलिन की बनावट वादन विधि के बारे में जानकारी प्राप्त करना